

पद १३५

(रागः सोहनी - तालः त्रिताल)

माई मोरे नयन बसे रघुबीर ॥ध्रु.॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे
कोमलगात्र शरीर ॥१॥ उमकत बादल चमकत बिजली अखंड
बरसत नीर ॥२॥ मानिक के प्रभु गिरिधर नागर । चरन कमल मन
धीर ॥३॥